सामर्थी बनाना
अधिवेशन 2

धारा में कदम

धारा में कदम

इससे पहले कि यह पाठ पूरा हो आपको इस बात का निमंत्रण दिया जाएगा कि आप परमेश्वर की सामर्थ की धारा मे आप कदम बढ़ा लें।

जब कलिसीया का जन्म पहली सदी में हुआ और यीशु का काम आरम्भिक दिनों मे आगे बढ़ रहा था तब कलिसीया केवल दो तरह के लोगों को जानती थी।

- अन्यजाति (या अविश्वासी) :
    - o जरूरी नहीं कि ये सभी अपराधी या शराबी या अनैतिक लोग थे।
    - o कुछ इनमें से आदर के योग्य और गरीब होंगे।
    - o अविश्वासी इसलिए क्योकि उन्होंने अपना विश्वास यीशु मे नहीं डाला था और उस पर भरोसा नहीं किया था।
    - o बहुत से लोग दूसरे मत के अनूयायी थे जिनका विश्वास यीशु की शिक्षाओं से भिन्न था।
- आत्मा से भरे हुए विश्वासी (या अविश्वासी) :
    - o प्रेरितों ने इस बात पर जोर दिया कि हरेक नए विश्वासी में तीन कड़ियां जरूर जुड़ी होनी चाहिए – पश्चातापी विश्वास, पानी का बपतिस्मा, पवित्रआत्मा के साथ बपतिस्मा।
    - o यह महत्वपूर्ण हैं क्योंकि इसी तरह से परमेश्वर ने सभी मनुष्यों के पुनः स्थापना की चाहत की है, उन सभी चीजों से जो आादम और हव्वा के पाप में गिरने से ले ली गई थी।

धारा में कदम

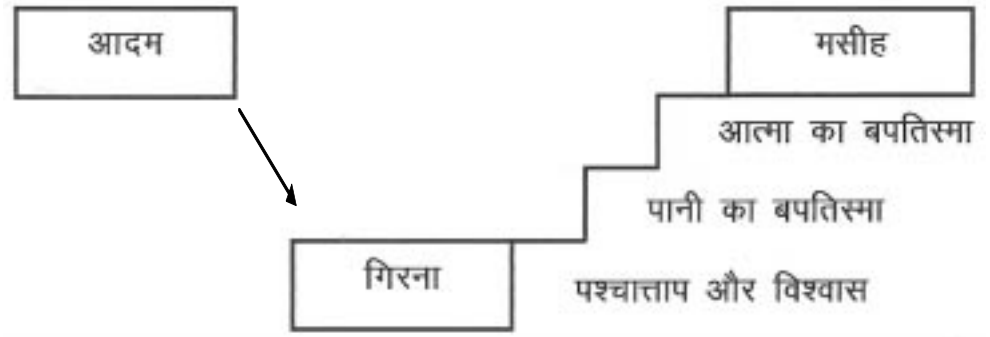

आदम, परमेश्वर की **उपस्थिति** .....से गिर गया।

और जिस **अहोदे** ..... पर परमेश्वर ने रखा था उससे हटा दिए गए।

''जब आदम ने पाप किया, तो पाप समस्त मानव जाति में प्रवेश हुआ। उसके पाप ने समस्त संसार में मृत्यु फैलाई, तो हर चीज़ पुरानी होने लगी और पाप के कारण मरने लगी। आदम के एक पाप ने मृत्यु का दण्ड बहुतों पर ले आया, पर मसीह बहुत से पापों को स्वतंत्रता से उठाए लिए चलता है और बदले मे महिमामय जीवन देता है। इस एक व्यक्ति का पाप, आदम के कारण मृत्यु सब पर राज्य करती है, पर जो परमेश्वर की क्षमा प्राप्त कर वरदान पाते हैं उस एक ही यीशु मसीह के द्वारा जीवन में राज्य पाते हैं'' — रोमियों 5:12, 17—19

पहले आदम ने जो खो दिया उसे यीशु, जो दूसरा आदम है, पुनः स्थापित करता है ताकि अब हम —

''जीवन में राज्य'' .....कर सके

यीशु हमें निम्न स्थान पर वापस लाता है
— अधिकार और सामर्थ

सामर्थ और आशिष की शक्तिशाली धारा यीशु के अनुयायीयों के बीच आज के दिन जैसी प्रतिज्ञा की गई बह रही है। वह हमें सभों को पवित्रआत्मा में डुबोने के लिए ठहरा है।

प्रसिद्ध महान डाक्टर वान ड्यूसेन जो कई सालों तक युनियन थियोलोजिकल सेमिनरी के अध्यक्ष थे ने घोषणा की, *''मुझे अहसास होता है कि पवित्रआत्मा की यह लहर जिस में पवित्रआत्मा के ऊपर जोर दिया गया है किसी भी जागृति से अधिक है। यह एक ऐसी महत्वपूर्ण क्रान्ति है जिसकी तुलना प्रेरितों की असल कलिसिया की स्थापना एवं प्रोटेस्टेंट सुधार के साथ की जा सकती है।''*

आज वास्तव में लोगों के तीन तरह के समूह पाए जाते हैं — अविश्वासी और आत्मा से भरे हुए विश्वासी (जैसे पहले कहा गया है), परन्तु इस संसार में एक तीसरी तरह का समुह भी है जो अपने आप को विश्वासी तो कहता है परन्तु जो आत्मा से भरे हुए विश्वासी नहीं हैं।

- ये वे लोग हैं जो मसीही रीति रिवाजों या चर्च मे पल बढ़ कर बड़े हुए है जहां पर उन्हें पवित्रआत्माा के बारें में यह नहीं सीखाया गया है कि वह आता है और उन्हे आलौकिक सामर्थ प्रदान करता है जो उनमें वास करती है।

- उनमें से कईयों ने इस बात को नहीं जाना है कि यदि धरती पर उसके काम को किया जाना हो तो परमेश्वर की बुलाहट में एक समपर्ण शामिल है

- वह मसीहत को केवल अपने लिए देखते हैं। कुछ ऐसे जैसे कि मसीहत उनके लिए आनन्द और शांति और अनन्त सुरक्षा को लाती है।

- यह एक नकली सुसमाचार है।

- यह हो सकता है अमेरिका के विश्वासीयों का एक बड़ा समूह हो जो अपने आपको विश्वासी समझते हों परन्तु उन्हें इस बात की कोई युक्ति नहीं कि यीशु और चेलों ने क्या आशा की कि एक विश्वासी जीवन कैसा होगा और उसका अनुभव कैसा होगा।

- नए नियम में इस तरह के समुह के लोग मौजूद नहीं हैं — वहां पर या तो विश्वासी थे या अविश्वासी थे। अविश्वासी मुर्तिपूजक थे; और विश्वासी वे थे जिन्होंने पानी में बपतिस्मा पाया था, पवित्रआत्मा से भरे हुए थे और यीशु के प्रति समर्पित जीवन को जी रहे थें।

धारा में कदम

आदम, परमेश्वर की .....**उपस्थिति**.....से गिर गया।

और जिस .....**अहोदे**..... पर परमेश्वर ने रखा था उससे हटा दिए गया।

''जब आदम ने पाप किया, तो पाप समस्त मानव जाति में प्रवेश हुआ। उसके पाप ने समस्त संसार में मृत्यु फैलाई , तो हर चीज़ पुरानी होने लगी और पाप के कारण मरने लगी। आदम के एक पाप ने मृत्यु का दण्ड बहुतों पर ले आया, पर मसीह बहुत से पापों को स्वतंत्रता से उठाए लिए चलता है और बदले मे महिमामय जीवन देता है। इस एक व्यक्ति का पाप, आदम के कारण मृत्यु सब पर राज्य करती है, पर जो परमेश्वर की क्षमा प्राप्त कर वरदान पाते हैं उस एक ही यीशु मसीह के द्वारा जीवन में राज्य पाते हैं'' — रोमियों 5:12, 17—19

आदम

मसीह

आत्मा का बपतिस्मा

पहले आदम ने जो खो दिया उसे यीशु, जो दूसरा आदम है, पुनः स्थापित करता है ताकि अब हम —

पानी का बपतिस्मा

गिरना .....पश्चात्ताप और विश्वास.....**''जीवन में राज्य''**.....कर सके

यीशु हमें निम्न स्थान पर वापस लाता है

— अधिकार और सामर्थ

सामर्थ और आशिष की शक्तिशाली धारा यीशु के अनुयायीयों के बीच जिसे आज के दिन के लिए प्रतिज्ञा किया गया है, बह रही है। वह हम सभों को पवित्रआत्मा में डुबोने के लिए ठहरा है।

प्रसिद्ध महान डाक्टर वान ड्यूसेन जो कई सालों तक युनियन थियोलोजिकल सेमिनरी के अध्यक्ष थे ने घोषणा की, *''मुझे अहसास होता है कि पवित्रआत्मा की यह लहर जिस में पवित्रआत्मा के उपर जोर दिया गया है किसी भी जागृति से अधिक है। यह एक ऐसी महत्वपूर्ण क्रान्ति है जिसकी तुलना प्रेरितों की असल कलिसिया की स्थापना एवं प्रोटेस्टेंट सुधार के साथ की जा सकती है।''*

रोमियों 5:12 में हमें एक संदर्भ मिलता है जो उस आरेख के बारे में बता रहा है जो आपकी प्रशिक्षण पुस्तिका में दिया गया है। इसमें हम दो व्यक्तियों (दो आदम) को देखते हैं जिनके चारों तरफ बाइबल की कहानी घुमती है :

- पहला आदम
    - हमारा जैविक पूर्वज
    - उसे परमेश्वर के प्रतिनिधि के रूप में काम करना था — परमेश्वर ने उसे सारे संसार पर अधिकारी ठहराया था।
    - परन्तु आदम ने परमेश्वर की आज्ञा न मानी और अपने प्रतिनिधित्व को इस धरती पर परमेश्वर की जगह शैतान से उसकी सलाहों के पीछे चलकर (उत्पत्ति 3) बदल लिया।
    - परमेश्वर की मनुष्य के लिए अदभुत योजना इस धरती पर एक किनारे हो गई, और गिर गई जब तक यीशु न आ गया।
- दूसरा आदम — यीशु (पौलुस के अनुसार)
    - उसका उद्धेश्य मानव जाति को छुड़ाना था और उस **उपस्थिति** और **अहोदे** पर पुनः स्थापित करना था जो परमेश्वर ने आदम को दिया था।
    - जब आदम और हव्वा ने परमेश्वर की अनाज्ञाकारिता की तब वे परमेश्वर की उपस्थिति से गिर गए और जिस अहोदे पर परमेश्वर ने रखा था उससे हटा दिए गए।
    - यीशु मसीह इसलिए आया कि वह इन सभी की पुनः स्थापना करे

      ''जब आदम ने पाप किया, तो पाप समस्त मानव जाति में प्रवेश हुआ । उसके पाप ने समस्त संसार में मृत्यु फैलाई, तो हर चीज़ पुरानी होने लगी और पाप के कारण मरने लगी। आदम का एक पाप मृत्यु के दण्ड को बहुतों पर ले आया, पर मसीह बहुत से पापों को स्वतंत्रता से उठाए लिए चलता है और बदले में महिमामय जीवन देता है।''
    - यीशु उस जीवन को जीने आया जिसमें आदम फेल हो गया था; वह जीवन जिसमें हम सब फेल हो गए हैं और तब उस मौत को मरने के लिए जिसे हमारे लिए रखा गया था। वह हमारा विकल्प बनने के लिए आया।
    - हम एक बार फिर वैसा बन सकते हैं जैसा परमेश्वर हमसे चाहता था।

      ''इस एक व्यक्ति आदम के पाप के कारण मृत्यु सब पर राज्य करती है, पर जो परमेश्वर की क्षमा प्राप्त कर वरदान पाते है,ं उस एक ही यीशु मसीह के द्वारा जीवन में राज्य पाते हैं''

धारा में कदम

आदम, परमेश्वर की .....**उपस्थिति**.....से गिर गया।

और जिस .....**अहोदे**..... पर परमेश्वर ने रखा था उससे हटा दिए गया।

''जब आदम ने पाप किया, तो पाप समस्त मानव जाति में प्रवेश हुआ। उसके पाप ने समस्त संसार में मृत्यु फैलाई , तो हर चीज़ पुरानी होने लगी और पाप के कारण मरने लगी। आदम के एक पाप ने मृत्यु का दण्ड बहुतों पर ले आया, पर मसीह बहुत से पापों को स्वतंत्रता से उठाए लिए चलता है और बदले मे महिमामय जीवन देता है। इस एक व्यक्ति का पाप, आदम के कारण मृत्यु सब पर राज्य करती है, पर जो परमेश्वर की क्षमा प्राप्त कर वरदान पाते हैं उस एक ही यीशु मसीह के द्वारा जीवन में राज्य पाते हैं'' – रोमियों 5:12, 17–19

आदम

मसीह

आत्मा का बपतिस्मा

पहले आदम ने जो खो दिया उसे यीशु, जो दूसरा आदम है, पुनः स्थापित करता है ताकि अब हम –

गिरना

पश्चात्ताप और विश्वास

.....**''जीवन में राज्य''**.....कर सके

यीशु हमें निम्न स्थान पर वापस लाता है

– अधिकार और सामर्थ

सामर्थ और आशिष की शक्तिशाली धारा यीशु के अनुयायीयों के बीच जिसे आज के दिन के लिए प्रतिज्ञा किया गया है, बह रही है। वह हम सभों को पवित्रआत्मा में डुबोने के लिए ठहरा है।

प्रसिद्ध महान डाक्टर वान ड्यूसेन जो कई सालों तक युनियन थियोलोजिकल सेमिनरी के अध्यक्ष थे ने घोषणा की, *''मुझे अहसास होता है कि पवित्रआत्मा की यह लहर जिस में पवित्रआत्मा के* उपर *जोर दिया गया है किसी भी जागृति से अधिक है। यह एक ऐसी महत्वपूर्ण क्रान्ति है जिसकी तुलना प्रेरितों की असल कलिसिया की स्थापना एवं प्रोटेस्टेंट सुधार के साथ की जा सकती है।''*

यह है वह महिमामय समाचार!

- यीशु आया और अपनी मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने और उन सभी कदमो को जो उसने हमें दिए हैं — पश्चाताप और विश्वास, पानी का बपतिस्मा और आत्मा का बपतिस्मा, के द्वारा उसने यह चाहा कि मनुष्य को वहां से आगे ले चले जहां पर वह पड़ा था ओर उसे पहले वाले अहोदे पर रख दे जहां पर आदम था (आरेख का प्रयोग करें)

- अब हम उन रास्तों पर चल सकते हैं जिन्हें आदम ने अपनी अनाज्ञाकारिता के द्वारा छोड़ दिया था।

- यीशु, दुसरे आदम ने उन सब चीजों को फिर से स्थापित किया जिन्हे पहले आदम ने खो दिया था ताकि अब हम एक राजा के समान **जीवन में राज्य** करें।

- यीशु हमें वापस अधिकार और सामर्थ के स्थान पर ले आते हैं।

बहुत से विश्वासी इस ''जीवन में राज्य'' का अनुभव नहीं करते हैं। क्योंकि उन्हें यह सिखाया गया है कि यीशु हमारा उद्धारकर्ता होने के लिए आया। हम उसे उद्धारकर्ता करके ग्रहण करते हैं और तब हम एक तरह से ऐसे ही ''लटके'' रह जाते हैं कि जब तक हम नहीं मरेंगे, या वह वापस नहीं आ जाता। क्योंकि वास्तविक उद्धार स्वर्ग जाने में है। बहुत से विश्वासी ये नहीं जानते पर यहा पर ऐसी कोई भी बात उनके जीवन में इसके इलावा उन्होंने जो कुछ अनुभव किया है, के अभी घट सकती है।

धारा में कदम

आदम, परमेश्वर की **उपस्थिति** .....से गिर गया।

और जिस **अहोदे** ..... पर परमेश्वर ने रखा था उससे हटा दिए गया।

''जब आदम ने पाप किया, तो पाप समस्त मानव जाति में प्रवेश हुआ। उसके पाप ने समस्त संसार में मृत्यु फैलाई , तो हर चीज़ पुरानी होने लगी और पाप के कारण मरने लगी। आदम के एक पाप ने मृत्यु का दण्ड बहुतों पर ले आया, पर मसीह बहुत से पापों को स्वतंत्रता से उठाए लिए चलता है और बदले मे महिमामय जीवन देता है। इस एक व्यक्ति का पाप, आदम के कारण मृत्यु सब पर राज्य करती है, पर जो परमेश्वर की क्षमा प्राप्त कर वरदान पाते हैं उस एक ही यीशु मसीह के द्वारा जीवन में राज्य पाते हैं'' — रोमियों 5:12, 17—19

आदम

मसीह

आत्मा का बपतिस्मा

पहले आदम ने जो खो दिया उसे यीशु, जो दूसरा आदम है, पुनः स्थापित करता है ताकि अब हम —

पानी का बपतिस्मा

गिरना

पश्चात्ताप और विश्वास

''जीवन में राज्य'' .....कर सके

यीशु हमें निम्न स्थान पर वापस लाता है

— अधिकार और सामर्थ

सामर्थ और आशिष की शक्तिशाली धारा यीशु के अनुयायीयों के बीच जिसे आज के दिन के लिए प्रतिज्ञा किया गया है, बह रही है। वह हम सभों को पवित्रआत्मा में डुबोने के लिए ठहरा है।

प्रसिद्ध महान डाक्टर वान ड्यूसेन जो कई सालों तक युनियन थियोलोजिकल सेमिनरी के अध्यक्ष थे ने घोषणा की, *''मुझे अहसास होता है कि पवित्रआत्मा की यह लहर जिस में पवित्रआत्मा के उपर जोर दिया गया है किसी भी जागृति से अधिक है। यह एक ऐसी महत्वपूर्ण क्रान्ति है जिसकी तुलना प्रेरितों की असल कलिसिया की स्थापना एवं प्रोटेस्टेंट सुधार के साथ की जा सकती है।''*

परन्तु यीशु अपने चेलों को यह सलाह नहीं दे रहा था कि वे मानसिक रूप से ''लटके रहें''।

- ''जैसे पिता ने मुझे इस संसार में भेजा है मैं भी तुम्हे भेजता हूं!''

- ''मेरे नाम के अधिकार में चले जाओं और सभी जातियों के लोगों को चेला बनाओ।''

- ''तुम मुझसे भी बड़ी–2 बातें करोगे जो मैंने की हैं, क्योंकि मैं अपने पिता के पास वापस जाता हूं और मैं तुम्हे पवित्रआत्मा भेज दूंगा।''

- यीशु मसीह उन्हें कोई ''लटके रहने वाली'' जीवन शैली की व्याख्या नहीं कर रहा था।

- असल में यीशु ने यह कहा, ''अधोलोक के फाटक तुम पर प्रबल न होंगे।''

    - एक खाई और उनके साथ बना हुआ किला नहीं, जिसमें सभी विश्वासी इक्ट्ठे सुरक्षित रख दिए गए हों उन सभी दुष्टात्माओं और नरक की शक्तियों से जो उनके विरूद्ध लड़ने की कोशिश में लगी हों और किले के द्वार उनके विरूद्ध इनके लिए सुरक्षित खड़े हों।

    - परन्तु यह पद यीशु के चेलों की उस तस्वीर को चित्रित करता है जिसमें उसके चेले उसके नाम में, उसके अधिकार में, उसकी शक्ति के साथ आगे बढ़ रहे हैं और अधोलोक के फाटक उनके विरूद्ध खड़े नहीं होंगे। इसका अर्थ यह नहीं है कि शैतान हमें ले लेगा। परन्तु हम जाएगें और शत्रु के कामों को इस धरती पर नाश कर देंगे। कब ? जब हम स्वर्ग में पहुंचेगे ? नहीं, अभी, आज, कल या अगले दिन।

    - यह परमेश्वर की इच्छा है कि उसके लोग इस संसार में यीशु की तरह चले जांए और शत्रु पर अपने अधिकार को कायम कर लें और वे शक्तिशाली पुरूष को बांध ले और वे उसको नष्ट कर दें और वे अभी परमेश्वर के राज्य को पृथ्वी पर ले आंए।

    - परमेश्वर चाहता है कि पवित्रआत्मा हममें वैसे ही बहे जैसे वह यीशु के द्वारा बहा था ताकि हम शैतान, और बीमारी और सांसारिक ज्ञान पर अधिकार को कायम कर सके।

    - राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु के प्रतिनिधित्व के रूप में हमें शासकों, अधिकारों और अन्धकार की शक्तियों के विरूद्ध खडे हो जाना है और उन्हे यीशु के नाम में हरा देना है।

- यह ''लटकने वाली'' मानसिकता नहीं है; यह ''जाकर ले लेने वाली'' मानसिकता है, और इसलिए हमें पवित्रआत्मा की सामर्थ और उपस्थिति की जरूरत है।

धारा में कदम

आदम, परमेश्वर की **उपस्थिति** .....से गिर गया।

और जिस **अहोदे** ..... पर परमेश्वर ने रखा था उससे हटा दिए गया।

''जब आदम ने पाप किया, तो पाप समस्त मानव जाति में प्रवेश हुआ। उसके पाप ने समस्त संसार में मृत्यु फैलाई , तो हर चीज़ पुरानी होने लगी और पाप के कारण मरने लगी। आदम के एक पाप ने मृत्यु का दण्ड बहुतों पर ले आया, पर मसीह बहुत से पापों को स्वतंत्रता से उठाए लिए चलता है और बदले मे महिमामय जीवन देता है। इस एक व्यक्ति का पाप, आदम के कारण मृत्यु सब पर राज्य करती है, पर जो परमेश्वर की क्षमा प्राप्त कर वरदान पाते हैं उस एक ही यीशु मसीह के द्वारा जीवन में राज्य पाते हैं'' — रोमियों 5:12, 17—19

आदम

मसीह

आत्मा का बपतिस्मा

पहले आदम ने जो खो दिया उसे यीशु, जो दूसरा आदम है, पुनः स्थापित करता है ताकि अब हम —

पानी का बपतिस्मा

गिरना

पश्चात्ताप और विश्वास

''जीवन में राज्य'' .....कर सके

यीशु हमें निम्न स्थान पर वापस लाता है

— अधिकार और सामर्थ

सामर्थ और आशिष की शक्तिशाली धारा यीशु के अनुयायीयों के बीच जिसे आज के दिन के लिए प्रतिज्ञा किया गया है, बह रही है। वह हम सभों को पवित्रआत्मा में डुबोने के लिए ठहरा है।

प्रसिद्ध महान डाक्टर वान ड्यूसेन जो कई सालों तक युनियन थियोलोजिकल सेमिनरी के अध्यक्ष थे ने घोषणा की, *''मुझे अहसास होता है कि पवित्रआत्मा की यह लहर जिस में पवित्रआत्मा के उपर जोर दिया गया है किसी भी जागृति से अधिक है। यह एक ऐसी महत्वपूर्ण क्रान्ति है जिसकी तुलना प्रेरितों की असल कलिसिया की स्थापना एवं प्रोटेस्टेंट सुधार के साथ की जा सकती है।''*

सदीयों से पवित्रआत्मा के सामर्थशाली काम पर लगभग सम्पूर्ण रूप से कलिसीया ने इस सच को खो दिया है :

- आलौकिक प्रगटीकरण की आशा नही की जाती थी और न ही इन्हे अक्सर स्वीकार किया जाता था।

- 50 साल पहले शायद ही आपने; यदि आपने सुना तो केवल पवित्रआत्मा को धर्मसिद्धान्त के रूप मे सुना।

- जैसा की आज है वहां पर धारा गहरी और चौड़ी नहीं थी जोकि सदीयों मसीहत में से बहती चली आ रही हो।

अब परमेश्वर ने कलिसीया को फिर से स्थापित किया है जो बहुत सालों से फेल हो चुकी थी और अलग पड़ी हुई थी। बाइबल में हम देखते हैं कि परमेश्वर के बहुत से चलन असल में उन बीती हुई सच्चाईयों की पुनः स्थापना का विवरण है। ये नई बातें नहीं हैं (नए लोग तो इसको अनुभव कर रहे हैं पर ये अपने आप में नई नहीं हैं)।

ये साधारण सच्चाईयां और अनुभव है जो एक तरफ रख दिए गए थे और जिनके पीछे नहीं चला गया :

- पुराने नियम में यह ''व्यवस्था की पुस्तक'' (बाइबल की पहली पांच पुस्तकें) की पुनः स्थापना थी। जिसके द्वारा राजा योशियाह के समय मे जागृति आई।

- मार्टिन लूथर के समय में यह 'विश्वास के द्वारा उद्धार' धर्मसिद्धान्त की पुनः स्थापना थी।

- जोन वैस्ली के समय मे यह 'पवित्रीकरण का सच' या 'पवित्र जीवन जीने की परिकल्पना' थी जिसकी कोई बातचीत नही कर रहा था।

- आज यह पवित्रआत्मा के वरदानों ओर सेवकाई की पुनः सथापना है जो अभी तक कलिसीया में एक किनारे रखे हुए थे पर ये अब चलन मे आ रहे हैं अैर कलिसीया आने वाली सदी में महानतम जागृति का अनुभव कर सकती है।

आपकी प्रशिक्षण पुस्तिका में डा. हेनरी पिटने वान ड्यूसेन की एक टिप्पणी दी गई है. ..*''मुझे अहसास होता है कि पवित्रआत्मा की यह लहर जिस में पवित्रआत्मा के* उपर *जोर दिया गया है किसी भी जागृति से अधिक है। यह एक ऐसी महत्वपूर्ण क्रान्ति है जिसकी तुलना प्रेरितों की असल कलिसिया की स्थापना एवं प्रोटेस्टेंट सुधार के साथ की जा सकती है।''*

धारा में कदम

आदम, परमेश्वर की **उपस्थिति** .....से गिर गया।

और जिस **अहोदे** ..... पर परमेश्वर ने रखा था उससे हटा दिए गया।

''जब आदम ने पाप किया, तो पाप समस्त मानव जाति में प्रवेश हुआ। उसके पाप ने समस्त संसार में मृत्यु फैलाई , तो हर चीज़ पुरानी होने लगी और पाप के कारण मरने लगी। आदम के एक पाप ने मृत्यु का दण्ड बहुतों पर ले आया, पर मसीह बहुत से पापों को स्वतंत्रता से उठाए लिए चलता है और बदले मे महिमामय जीवन देता है। इस एक व्यक्ति का पाप, आदम के कारण मृत्यु सब पर राज्य करती है, पर जो परमेश्वर की क्षमा प्राप्त कर वरदान पाते हैं उस एक ही यीशु मसीह के द्वारा जीवन में राज्य पाते हैं'' — रोमियों 5:12, 17—19

आदम

मसीह

आत्मा का बपतिस्मा

पहले आदम ने जो खो दिया उसे यीशु, जो दूसरा आदम है, पुनः स्थापित करता है ताकि अब हम —

पानी का बपतिस्मा

गिरना

पश्चात्ताप और विश्वास

''जीवन में राज्य'' .....कर सके

यीशु हमें निम्न स्थान पर वापस लाता है

— अधिकार और सामर्थ

सामर्थ और आशिष की शक्तिशाली धारा यीशु के अनुयायीयों के बीच जिसे आज के दिन के लिए प्रतिज्ञा किया गया है, बह रही है। वह हम सभों को पवित्रआत्मा में डुबोने के लिए ठहरा है।

प्रसिद्ध महान डाक्टर वान ड्यूसेन जो कई सालों तक युनियन थियोलोजिकल सेमिनरी के अध्यक्ष थे ने घोषणा की, *''मुझे अहसास होता है कि पवित्रआत्मा की यह लहर जिस में पवित्रआत्मा के उपर जोर दिया गया है किसी भी जागृति से अधिक है। यह एक ऐसी महत्वपूर्ण क्रान्ति है जिसकी तुलना प्रेरितों की असल कलिसिया की स्थापना एवं प्रोटेस्टेंट सुधार के साथ की जा सकती है।''*

बिशप लेसली न्युबिगिन एक विश्व प्रसिद्ध लूथरन अगुवे और वर्ल्ड कांउसिल आफ चर्चेज़ के भूतपुर्व अध्यक्ष थे, जो ऐसे प्रथम कलिसीयाई अगुवे हुए हैं, जिन्होनें इस क्रांति की विशेषता को मान लिया और अपनी पुस्तक ''परमेश्वर का घराना'' में इस तथ्य के बारे मे इशारा किया है।

- रोमन कैथोलिकवाद के धर्म सिद्धान्तों ने ''कलिसीया'' के ढ़ांचे पर आधारमय रूप से जोर दिया।

- प्रोटैस्टेंटवाद के धर्म सिद्धान्तो ने ''संदेश'' के ढ़ांचे पर आधारमय रूप से जोर दिया।

- परन्तु अब वह कहता है कि, ''मसीही के रीति रिवाज की तीसरी धारा को जानना जरूरी है, जिसका अपने आप में एक अनुठा चरित्र है... इसका आवश्यक तत्व इस बात मे निहित है कि आज का मसीही जीवन पवित्रआत्मा की उपस्थिति और उसकी सामर्थ को अनुभव करना है।''

यह तीसरी धारा है जिसमे हमें कदम बढ़ाने का अवसर है।

वह इन्तजार कर रहा है और पवित्रआत्मा के बपतिस्में को हम सब को देने को तैयार है। वह इन्तजार कर रहा है कि हमें भर दे और हमें सामर्थी बना दे और हमे उसके लिए जीवन जीने के योग्य बना कर भेज दे और हम उसके लिए बड़े कामों को करें।

धारा में कदम

आदम, परमेश्वर की **उपस्थिति** .....से गिर गया।

और जिस **अहोदे** ..... पर परमेश्वर ने रखा था उससे हटा दिए गया।

''जब आदम ने पाप किया, तो पाप समस्त मानव जाति में प्रवेश हुआ। उसके पाप ने समस्त संसार में मृत्यु फैलाई , तो हर चीज़ पुरानी होने लगी और पाप के कारण मरने लगी। आदम के एक पाप ने मृत्यु का दण्ड बहुतों पर ले आया, पर मसीह बहुत से पापों को स्वतंत्रता से उठाए लिए चलता है और बदले मे महिमामय जीवन देता है। इस एक व्यक्ति का पाप, आदम के कारण मृत्यु सब पर राज्य करती है, पर जो परमेश्वर की क्षमा प्राप्त कर वरदान पाते हैं उस एक ही यीशु मसीह के द्वारा जीवन में राज्य पाते हैं'' — रोमियों 5:12, 17—19

आदम

मसीह

आत्मा का बपतिस्मा

पहले आदम ने जो खो दिया उसे यीशु, जो दूसरा आदम है, पुनः स्थापित करता है ताकि अब हम —

पानी का बपतिस्मा

गिरना

पश्चात्ताप और विश्वास

''जीवन में राज्य'' .....कर सके

यीशु हमें निम्न स्थान पर वापस लाता है

— अधिकार और सामर्थ

सामर्थ और आशिष की शक्तिशाली धारा यीशु के अनुयायीयों के बीच जिसे आज के दिन के लिए प्रतिज्ञा किया गया है, बह रही है। वह हम सभों को पवित्रआत्मा में डुबोने के लिए ठहरा है।

प्रसिद्ध महान डाक्टर वान ड्यूसेन जो कई सालों तक युनियन थियोलोजिकल सेमिनरी के अध्यक्ष थे ने घोषणा की, *''मुझे अहसास होता है कि पवित्रआत्मा की यह लहर जिस में पवित्रआत्मा के उपर जोर दिया गया है किसी भी जागृति से अधिक है। यह एक ऐसी महत्वपूर्ण क्रान्ति है जिसकी तुलना प्रेरितों की असल कलिसिया की स्थापना एवं प्रोटेस्टेंट सुधार के साथ की जा सकती है।''*

पवित्रआत्मा के द्वारा सामर्थी बनाने के अनुभव के बारे में हम बाद मं व्याख्या करेगें। परन्तु पहले हमें इस बात को समझ लेना जरूरी है कि यह ''क्या नहीं है'' इससे पहले कि हम बतांए कि यह क्या है।

पवित्रआत्मा का बपतिस्मा ये नहीं है :

1. यह जीवन परिवर्तन नहीं है।

- इससे पहले कि हम पवित्रआत्मा के बपतिस्में को प्राप्त करें। हमें नया जन्म पाना और जीवन परिवर्तन के रास्ते पर चलना जरूरी है।

- जीवन परिवर्तन कुछ ऐसी बात है जिसे ''हम करते हैं''; जबकि पवित्रआत्मा का बतिस्मा कुछ ऐसी बात है जिसे ''मसीह'' हममें और हमारे लिए ''करता'' है।

2. यह एक नए प्रकार की समझ नहीं है।

- पवित्रआत्मा की गहरी समझ कुछ ऐसी बात है जिसे हम पवित्रआत्मा के बपतिस्मे के समय समझते हैं, परन्तु यह बपतिस्मा ऐसा नहीं है कि हमारे दिमाग के या समझ में पैदा हो।

3. यह एक नई प्रकार की आराधना नहीं है।

- हमें पवित्रआत्मा या यीशु या परमेश्वर पिता के लिए, इसे एक नई आराधना नहीं समझना चाहिए इसकी बजाए यह बपतिस्में का परिणाम है — हम प्रेम करेंगे और पवित्रआत्मा को और अधिक सराहेगें।

4. यह कोई आत्मिक व पवित्र दिखने का चिन्ह भी नहीं है।

- इस विषय को लेकर अक्सर बहुत सी गलतफहमीयां पाई जाती हैं। ऐसा नहीं है कि हमें पवित्रआत्मा के साथ बपतिस्मे का हक मिल गया है। चूंकि हम वरिष्ठ हैं या हमारा काम अच्छा है इसलिए हमें यह इनाम में मिला है।

- नए नियम में हम देखते है कि पवित्रआत्मा का बपतिस्मा ''आरम्भिक सुसज्जिकरण'' का एक हिस्सा था; इसे नए विश्वासीयों के द्वारा अनुभव किया गया था!

- कलिसीया में ऐसे समय आते हैं जब इसके कारण वरिष्ठ विश्वासीयों में अनबन हो जाती है। नए विश्वासी कलिसीया मे आते हैं और उन सभी बातों को ले लेना चाहते हैं जो यीशु ने उनके लिए तैयार की हैं जिसमें पवित्रआत्मा के साथ बपतिस्मा भी शामिल है। वे भर दिए और सामर्थी बनाए जाते हैं जिसके कारण वरिष्ठ विश्वासी ईर्ष्या महसुस करते हैं या फिर ऐसा महसुस करते हैं कि परमेश्वर उनके साथ सही व्यवहार नहीं कर रहा है।

- जबकि नए परिवर्तित आत्मा से भरे हुए विश्वासी परमेश्वर की बातों में अभी भी अपरिपक्व हों। वे तौभी उसकी सामर्थ और उपस्थिति मे भरे हो सकते हैं, परन्तु वे ये ना जानते हो कि इसे कैसे प्रयोग करना है या बाटना हैं। और इसलिए न. 5...

आओ हम पुरी तौर पर समझ ले कि आत्मा के साथ बपतिस्मे में क्या क्या शामिल होता है। कभी–2 ये घोषित करना सहायक होगा कि ये वर्णन ''क्या नहीं'' है बजाए इसके कि ''यह क्या'' है।

1. पवित्रआत्मा का बपतिस्मा क्या नहीं हैः :

1. **यह जीवन परिवर्तन नहीं है।**
आत्मा में बपतिस्मा यीशु मसीह को उद्धारकर्ता करके ग्रहण करने में जीवन परिवर्तन नहीं है, न ही यह उसे एक प्रभु के रूप में मान लेने से गहरा जीवन परिवर्तन है।

2. **यह एक नए प्रकार की समझ नहीं है।**
आत्मा में बपतिस्मा, पवित्रआत्मा की शिक्षा की समझ नहीं है।

3. **यह एक नई प्रकार की आराधना नहीं है।**
पवित्रआत्मा में बपतिस्मा, पवित्रआत्मा की महान आराधना नहीं है।

4. **यह कोई आत्मिक व पवित्र दिखने का चिन्ह भी नहीं है।**
आत्मा का बपतिस्मा, आत्मिक परिपक्वता या पवित्रता का चिन्ह नहीं है, पर ये व्यक्ति का पवित्रआत्मा के साथ सम्बन्ध बना देता है जो उसे आत्मिक परिपक्वता और पवित्रता में अतिशीध्र बढ़ने में मदद देता है जो वह इसके बिना नहीं कर सकता।

5. **यही केवल सब कुछ नहीं जिसकी हमें आवश्यकता हैं ।**
आत्मा में बपतिस्मा हमें पूर्ण रूप से मसीह में होने का केवल एक भाग मात्र है। यह एक परिचय, एक शुरूआत, आत्मा के जीवन का एक द्वार है।

2. तब वह क्या है ?

ये पवित्रआत्मा के साथ व्यक्तिगत अनुभव है

जब पिछले सालों में पवित्रआत्मा के बारे में देखा गया, तो बहुत से मसीहीयों का घ्यान पवित्रआत्मा के लिए केवल मात्र एक धर्मसिद्धान्त रहा है। प्रारम्भिक विश्वासीयों के लिए पवित्रआत्मा एक ''अनुभव'' था इससे पहले कि वह ''ध र्मसिद्धान्त'' बना। ये प्रतिज्ञा किया हुआ व्यक्ति था, जो उनके मध्य रह रहा था और काम कर रहा था। पूरा का पूरा नया नियम पवित्रआत्मा के व्यक्तिगत अनुभव से जीवित है। एक व्यक्ति जब पवित्रआत्मा से बपतिस्मा पाता हैं तब वह आत्मा को उसके मध्य में रहने का अनुभव करता है जो उससे पहले सत्य नहीं था।

5. यही केवल सब कुछ नहीं जिसकी हमें आवश्यकता हैं ।

- पवित्रआत्मा के साथ बपतिस्मा शिखर नहीं हैं जैसा कि कुछ कलिसीयांए संकेत देती हैं। यह इस बात का चिन्ह नहीं कि हम ''सबसे ऊपर पहुंच'' गए हैं।

- मसीह में सम्पूर्ण होने के लिए यह केवल एक हिस्सा मात्र है। यह एक परिचय है, एक आरम्भ, पवित्रआत्मा के घेरे में नए जीवन को आरम्भ करने का एक द्वार मात्र।

- यह आपको कोई ''विशेष सन्त'' नहीं बना देता जिसके पास परमेश्वर से सीधा सम्बंध रखने के लिए सीधी तार हो जिसके कारण हमें कलिसीया के अगुवों की न तो सुनने की जरूरत है और न हीं उत्तर देने की जरूरत है।

तब यह है क्या ?

- पहली सदी के विश्वासीयो के लिए पवित्रआत्मा के साथ बपतिस्मा एक ''अनुभव'' था, इससे पहले कि यह ''धर्मसिद्धान्त'' बनता। यह एक वायदा किया हुआ था, उनमें वास कर रहा था और उनके द्वारा काम कर रहा था और उन्हें सामर्थ और आत्मिक ऊर्जा और अगुवाई दे रहा था।

- अपनी प्रशिक्षण पुस्तिका में कब ये (जब पिछले वर्षों में पवित्रआत्मा के बारे में. ..) धर्मसिद्धान्त बना उस संदर्भ को पढ़ें। यह एक वायदा किया हुआ था, उनमें वास कर रहा था और उनके द्वारा काम कर रहा था।

आओ हम पुरी तौर पर समझ ले कि आत्मा के साथ बपतिस्मे में क्या क्या शामिल होता है। कभी–2 ये घोषित करना सहायक होगा कि ये वर्णन ''क्या नहीं'' है बजाए इसके कि ''यह क्या'' है।

1. पवित्रआत्मा का बपतिस्मा क्या नहीं हैः :

1. **यह जीवन परिवर्तन नहीं है।**
आत्मा में बपतिस्मा यीशु मसीह को उद्धारकर्ता करके ग्रहण करने में जीवन परिवर्तन नहीं है, न ही यह उसे एक प्रभु के रूप में मान लेने से गहरा जीवन परिवर्तन है।

2. **यह एक नए प्रकार की समझ नहीं है।**
आत्मा में बपतिस्मा, पवित्रआत्मा की शिक्षा की समझ नहीं है।

3. **यह एक नई प्रकार की आराधना नहीं है।**
पवित्रआत्मा में बपतिस्मा, पवित्रआत्मा की महान आराधना नहीं है।

4. **यह कोई आत्मिक व पवित्र दिखने का चिन्ह भी नहीं है।**
आत्मा का बपतिस्मा, आत्मिक परिपक्वता या पवित्रता का चिन्ह नहीं है, पर ये व्यक्ति का पवित्रआत्मा के साथ सम्बन्ध बना देता है जो उसे आत्मिक परिपक्वता और पवित्रता में अतिशीध्र बढ़ने में मदद देता है जो वह इसके बिना नहीं कर सकता।

5. **यही केवल सब कुछ नहीं जिसकी हमें आवश्यकता हैं ।**
आत्मा में बपतिस्मा हमें पूर्ण रूप से मसीह में होने का केवल एक भाग मात्र है। यह एक परिचय, एक शुरूआत, आत्मा के जीवन का एक द्वार है।

2. तब वह क्या है ?

ये पवित्रआत्मा के साथ व्यक्तिगत अनुभव है

जब पिछले सालों में पवित्रआत्मा के बारे में देखा गया, तो बहुत से मसीहीयों का घ्यान पवित्रआत्मा के लिए केवल मात्र एक धर्मसिद्धान्त रहा है। प्रारम्भिक विश्वासीयों के लिए पवित्रआत्मा एक ''अनुभव'' था इससे पहले कि वह ''ध र्मसिद्धान्त'' बना। ये प्रतिज्ञा किया हुआ व्यक्ति था, जो उनके मध्य रह रहा था और काम कर रहा था। पूरा का पूरा नया नियम पवित्रआत्मा के व्यक्तिगत अनुभव से जीवित है। एक व्यक्ति जब पवित्रआत्मा से बपतिस्मा पाता हैं तब वह आत्मा को उसके मध्य में रहने का अनुभव करता है जो उससे पहले सत्य नहीं था।

पवित्रआत्माा के साथ बपतिस्में के अनुभव में 5 बातें शामिल हैं।

. 1. यह आत्मा के द्वारा एक **<u>डुबकी</u>** है।

- पवित्रआत्मा के साथ बपतिस्मा लेने से हमारे जीवन में उसकी सामर्थ और उसकी उपस्थिति का बहाव होता है। जैसे ही पवित्रआत्मा हमें नए रास्ते पर ले चलता है — हमारी आत्मा में, हमारे प्राण और देह में।

- हमारे तीन हिस्से होते हैं — शरीर, प्राण और आत्मा

    - जब हमारा नया जन्म हो जाता है तब पवित्रआत्मा हमारी आात्मा में जीवन ले आता है। वह अब हममें वास करता है।

    - पर पवित्रआत्मा का हममें वास करना और पवित्रआत्मा का किसी के जीवन को भरना और पूर्ण करना दोनों में एक बहुत बड़ी विभिन्नता है।

- बाइबल में पवित्रआत्मा को अक्सर पानी के समान कहा गया है। और यह बिल्कुल ऐसा है मानो हमारे पास पानी का घड़ा हो और एक गिलास।

    - जब हमारा नया जन्म हो जाता है, तो यह पवित्रआत्मा के आने के समान है और हमारे जीवन में एक गिलास का आना है यदि वह पानी से भरा है।

    - पुराने नियम में पवित्रआत्मा कुछ विशेष लोगों को विशेष कामों और अनुभवों के लिए दिया जाता था। एक बार काम खत्म होने के बाद पवित्र आत्मा को ''वापस घड़े में डाल दिया'' जाता था।

    - अब यीशु मसीह के जी उठने की रात, यीशु ने चेलों को पाया और उन पर फूंका और कहा, ''पवित्रआत्मा लो।'' इसलिए उसी रात नए नियम के चेलों में पवित्रआत्मा स्थाई रूप से वास करने आ गया। अब वे नया जन्म पाए हुए थे पवित्रआत्मा उनमें वास कर रहा था, जैसा वह हममें हैं जिन्होंने नया जन्म पाया है।

    - परन्तु पिन्तेकुस्त के दिन, उन्हीं चेलों को जिन पर यीशु ने फूंका था कहा, ''पवित्रआत्मा को लो'', पवित्रशास्त्र कहता है उस दिन उन्हे बपतिस्मा दिया जाएगा, वे पवित्रआत्मा के साथ डुबाए जाऐगें।

    - यह पानी के भरे हुए गिलास को घड़े में डालने के समान है। अब पानी न केवल अन्दर है पर गिलास के चारों तरफ — अन्दर में, बाहर, चारों तरफ गिलास के। यह पूर्ण रूप से डुब गया, इसी तरह से एक विश्वासी पवित्रआत्मा में पूरी तरह डूब जाता है जब यीशु उनको पवित्रआत्मा के साथ बपतिस्मा देता है।

3. पवित्रआत्मा के साथ व्यक्तिगत रुप से बपतिस्मा यह शामिल करेगा :

1. ये आत्मा के द्वारा एक ..... **डुबकी** ..... है।

पवित्रआत्मा के बपतिस्मे को पाने का अर्थ है कि उसकी सामर्थ और उपस्थिति को अपने जीवनों में छोड़ना जब पवित्रआत्मा नए तरीके से हम में काम करता है।

''जब आपने यीशु को अपना उद्धारकर्ता ग्रहण किया,
आपमे जीवित आत्मा आई, नया जीवन प्रारम्भ करने लगी और
अपना सही स्थान आपकी आत्मा पर लेने लगी–
आपका मनौवैज्ञानिक भाग (व्यक्तित्व, इच्छा और संवेदना)
और आपकी देह – आपका शारिरीक भाग।

''आपकी देह और प्राण, फिर भी थे अभयस्त
''कार्य करने में और देर नहीं हुई कि वे
आपके जीवन में अधिकाई से उमड़ पड़ा
आत्मा में और चालक का स्थान ले लिया।

''ऐसा लगेगा कि कुछ होना है आपकी देह और प्राण में इससे पहले कि आपकी आत्मा मज़बूत पकड़ ले ले । वह ''कुछ'' जो होना है कि पवित्रआत्मा जो आपकी आत्मा में रहता है, आपके प्राण और देह में भरने के लिए उसे बहने की जरूरत है''।

डेनिस एंव रीटा बैनेट, पृष्ठ 17–18
''पवित्रआत्मा और आप''

2. आत्मा के द्वारा एक ..... **बहाव** ..... है।

''यीशु ने उत्तर देते हुए उससे कहा, ''प्रत्येक जो इस जल में से पीता है वह फिर प्यासा होगा परन्तु जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूंगा, अनन्तकाल तक कभी प्यासा न होगा परन्तु वह जल जो मैं उसे दूंगा उसमें अनन्त जीवन कें लिए उमंडने वाले जल का स्रोता हो जाएगा'' – यहून्ना 4:13–14

''यदि कोई प्यासा हो तो मेंरे पास आए और पीए, जो मुझ पर विश्वास करता है जैसा कि पवित्रशास्त्र में कहा गया है, उसे के हृदय में से जीवन के जल की नदीयां बह निकलेगीं परन्तु ये उसने पवित्रआत्मा के बारे में कहा जिसे उस पर विश्वास करने वाले पाने पर थे इसीलिए कि पवित्रआत्मा अब तक नही दिया गया था क्योंकि यीशु अब तक महिमा में नही पहुंचा था''– यहून्ना 7:37–39

एक **पेय** एक चीज़ है!
एक **नदी** दूसरी है !

कौन एक पेय से सन्तुष्ट होगा जबकि उसके पास नदी है?
उदाहरण : एक सिंचाई की नहर

- पवित्रआत्मा के साथ ''बपतिस्मा'' एक अच्छी बात है, क्योंकि वास्तव में यही घटता है। बपतिस्में का अर्थ है डूबना। यूनानी भाषा में ''बेपटिज़ो'' शब्द जहाजों के लिए प्रयोग किया गया है जो भूमध्य सागर में डूब गए थे। वे ''बेपटिज़ो'' थे; वे डूब गए थे और वे वहां लम्बे समय से पड़े हुए थे इसका अर्थ यह हुआ कि जहाज का हर हिस्सा अब डुबा हुआ था इसका हर अंश समुद्री ''पानी से भरा'' हुआ था, यह पूरी तरह पानी में था। क्योंकि इसका बपतिस्मा समुद्र में हो गया था।

- यीशु इसी तरह हमारे साथ करना चाहता है वह चाहता है कि हम परमेश्वर की आत्मा के द्वारा अपने पूरे जीवन में डुब जांए, भर जांए, और संतृप्त हो जाएं।

- अक्सर क्या होता है जब हम यीशु को ग्रहण करते हैं, हम उसके पास उसे अपना उद्धारकर्ता मानते हुए आते हैं, पवित्रआत्मा हमारे जीवन में आ जाता है, हम नया जीवन जीना आरम्भ करते हैं, हम जानते हैं कि यीशु यहां है, हम प्रार्थना करते हैं कि यीशु पूरा दिन हमारे साथ रहे। पर जब दिन के दौरान दबाव बढ़ने लगता है, तो हम भुल जाते हैं कि सुबह हमने क्या प्रार्थना की थी। हम इन दबावों और हालातों को उसी तरह से व्यवहार करते हैं जैसे हम करते आए हैं — अपनी समझ से बाहर, अपने प्राणों से बाहर होकर। हमारा प्राण हमारा दिमाग, हमारी भावनांए और हमारी इच्छाएं हैं या हम अपने शरीर पर नियंत्रण न रखते हुए इनके साथ — अपनी इच्छाओं से या अपनी स्वाभाविक प्राकृति के अनुसार व्यवहार करते है। और जब हम रात में घर आते हैं, हम प्रार्थना करतें हैं, और हम जान लेते हैं कि पूरे दिन में एक बार भी हमने पवित्रआत्मा के बारे में सोचा तक नहीं, और हमने ऐसा जीवन जीया जैसा हमने पहले बहुत से तरीको ंसे जीया था, और हमें क्षमा और पश्चाताप करने की जरूरत पड़ती है।

- परन्तु जब हम पवित्रआत्मा के साथ बपतिस्मा पा लेते हैं और वह हमारे जीवन में सामर्थ और पूर्णता के साथ छोड़ दिया गया है तब पवित्रआत्मा अपनी आत्मा के द्वारा हमारे प्राण और शरीर को अपने नियंत्रंण मे रखता है।

- अब हम प्राण और शरीर, अपनी अभिलाषाओं, अपनी चाहतों, अपने दिमाग, भावनाओं, और इच्छा से कहते हैं,'' ठीक है, अब से तुम मेरे नियत्रंण में नहीं हो मैं डुब गया हूं, पवित्रआत्मा से संतृप्त हो गया हूं, अब यह वही है जो इस बात का निर्णय लेगा कि मुझे क्या करना चाहिए। वही मेरी अगुवाई करेगा और मुझे निर्देशन देगा।''

- डेनिस और रीटा बेनेट की टिप्पणी को आप अपनी प्रशिक्षण पुस्तिका में देखें, ''ऐसा लगेगा कि कुछ होना है आपकी देह और प्राण में इससे पहले कि आपकी आत्मा मज़बूत पकड़ ले ले। वह ''कुछ'' जो होना है कि पवित्रआत्मा जो आपकी आत्मा में रहता है, आपके प्राण और देह में भरने के लिए उसे बहने की जरूरत है''।

3. पवित्रआत्मा के साथ व्यक्तिगत रुप से बपतिस्मा यह शामिल करेगा :

1. ये आत्मा के द्वारा एक ..... **डुबकी** ..... है।

पवित्रआत्मा के बपतिस्मे को पाने का अर्थ है कि उसकी सामर्थ और उपस्थिति को अपने जीवनों में छोड़ना जब पवित्रआत्मा नए तरीके से हम में काम करता है।

''जब आपने यीशु को अपना उद्धारकर्ता ग्रहण किया,
आपमे जीवित आत्मा आई, नया जीवन प्रारम्भ करने लगी और
अपना सही स्थान आपकी आत्मा पर लेने लगी–
आपका मनौवैज्ञानिक भाग (व्यक्तित्व, इच्छा और संवेदना)
और आपकी देह – आपका शारिरीक भाग।

''आपकी देह और प्राण, फिर भी थे अभयस्त
''कार्य करने में और देर नहीं हुई कि वे
आपके जीवन में अधिकाई से उमड़ पड़ा
आत्मा में और चालक का स्थान ले लिया।

''ऐसा लगेगा कि कुछ होना है आपकी देह और प्राण में इससे पहले कि आपकी आत्मा मज़बूत पकड़ ले ले । वह ''कुछ'' जो होना है कि पवित्रआत्मा जो आपकी आत्मा में रहता है, आपके प्राण और देह में भरने के लिए उसे बहने की जरूरत है''।

डेनिस एंव रीटा बैनेट, पृष्ठ 17–18
''पवित्रआत्मा और आप''

2. आत्मा के द्वारा एक ..... **बहाव** ..... है।

''यीशु ने उत्तर देते हुए उससे कहा, ''प्रत्येक जो इस जल में से पीता है वह फिर प्यासा होगा परन्तु जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूंगा, अनन्तकाल तक कभी प्यासा न होगा परन्तु वह जल जो मैं उसे दूंगा उसमें अनन्त जीवन कें लिए उमंडने वाले जल का स्रोता हो जाएगा'' – यहून्ना 4:13–14

''यदि कोई प्यासा हो तो मेंरे पास आए और पीए, जो मुझ पर विश्वास करता है जैसा कि पवित्रशास्त्र में कहा गया है, उसे के हृदय में से जीवन के जल की नदीयां बह निकलेगीं परन्तु ये उसने पवित्रआत्मा के बारे में कहा जिसे उस पर विश्वास करने वाले पाने पर थे इसीलिए कि पवित्रआत्मा अब तक नही दिया गया था क्योंकि यीशु अब तक महिमा में नही पहुंचा था''– यहून्ना 7:37–39

एक **पेय** एक चीज़ है!
एक **नदी** दूसरी है !

कौन एक पेय से सन्तुष्ट होगा जबकि उसके पास नदी है?
उदाहरण : एक सिंचाई की नहर

2. दूसरी बात जो घटती है वह यह कि पवित्रआत्मा का हमारे जीवन में एक **<u>बहाव</u>** होता है।

- यहून्ना 4 में हम यीशु को सामरिया में उसके चेलों के साथ पढ़ते हैं। यीशु कुएं के पास आराम करने लगा जब उसके चेले भोजन ढुंढने के लिए शहर में चले गए थे और वहां पर एक सामरी स्त्री आती है। साधारतया एक यहूदी सामरियों से बात नहीं करता था फिर यह तो एक स्त्री थी। यीशु इस स्त्री को ढुंढ रहा था। यह एक अनैतिक स्त्री थी।
    - यीशु ने कहा, ''प्रत्येक जो इस जल में से पीता है वह फिर प्यासा होगा (कुएं के पानी से तुलना करें) परन्तु जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूंगा, अनन्तकाल तक कभी प्यासा न होगा परन्तु वह जल जो मैं उसे दूंगा उसमें अनन्त जीवन कें लिए उमंडने वाले जल का स्रोता हो जाएगा''

    - वह बहुत ही रूची लेने लगी क्योंकि यीशु ने उसे थोड़े से शब्दों में बता दिया कि वह अपना जीवन कैसे जी रही है और कैसे 5 पति कर चुकी है।

    - वह अपने घर वापस दौड़ गई और शहर के सब लोगों को आमंत्रित करने लगी कि वे उस पुरूष से मिलें जिसने उसके जीवन के बारें में सब कुछ बता दिया था।

    - उसने और कईयों ने उस पानी को पीया जिसको यीशु दे रहा था।

- बाद में यीशु ने यहुन्ना 7 में कहा, ''यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आए और पीए, जो मुझ पर विश्वास करता है जैसा कि पवित्रशास्त्र में कहा गया है, उसेक ह्रदय में से जीवन के जल की नदीयां बह निकलेगीं परन्तु ये उसने पवित्रआत्मा के बारे में कहा, जिसे उस पर विश्वास करने वाले पाने पर थे इसीलिए कि पवित्रआत्मा अब तक नही दिया गया था क्योंकि यीशु अब तक महिमा में नही पहुंचा था''
    - वह पवित्रआत्मा के बारे में कह रहा था जो हर उस व्यक्ति को दिया जाएगा जो उस विश्वास करेगा, परन्तु आत्मा तब तक नहीं दिया गया था क्योंकि वह अब तक अपने पिता के पास वापस नहीं गया था।

    - जब वह अपने पिता के पास वापस चला गया वह अपने चेलों के लिए नीचे पवित्रआत्मा को भेज रहा था।

    - यीशु क्रुस पर जाने से पहले पिन्तेकुस्त के दिन के अनुभव का वर्णन कर रहां था।

    - यीशु कह रहा था कि न केवल ऐसा ''पेय'' उपलब्ध होगा जो अनन्त जीवन की ओर ले चलता है (जैसा यहुन्ना 4 दर्शाया गया है) परन्तु वहां पर एक ''नदी'' जो आशिष और सामर्थ की एक नदी है उपलब्ध होगी जिसमे आप डुब सकते हैं।

- एक पेय एक चीज़ है परन्तु एक नदी दूसरी चीज़ है।

    - कौन एक पेय से संतुष्ट होगा जबकि उसके पास नदी है।

3. पवित्रआत्मा के साथ व्यक्तिगत रुप से बपतिस्मा यह शामिल करेगा :

1. ये आत्मा के द्वारा एक ..... **डुबकी** ..... है।

पवित्रआत्मा के बपतिस्मे को पाने का अर्थ है कि उसकी सामर्थ और उपस्थिति को अपने जीवनों में छोड़ना जब पवित्रआत्मा नए तरीके से हम में काम करता है।

'जब आपने यीशु को अपना उद्धारकर्ता ग्रहण किया,
आपमे जीवित आत्मा आई, नया जीवन प्रारम्भ करने लगी और
अपना सही स्थान आपकी आत्मा पर लेने लगी–
आपका मनौवैज्ञानिक भाग (व्यक्तित्व, इच्छा और संवेदना)
और आपकी देह – आपका शारिरीक भाग।

''आपकी देह और प्राण, फिर भी थे अभयस्त
''कार्य करने में और देर नहीं हुई कि वे
आपके जीवन में अधिकाई से उमड़ पड़ा
आत्मा में और चालक का स्थान ले लिया।

''ऐसा लगेगा कि कुछ होना है आपकी देह और प्राण में इससे पहले कि आपकी आत्मा मज़बूत पकड़ ले ले । वह ''कुछ'' जो होना है कि पवित्रआत्मा जो आपकी आत्मा में रहता है, आपके प्राण और देह में भरने के लिए उसे बहने की जरूरत है''।

डेनिस एंव रीटा बैनेट, पृष्ठ 17–18
''पवित्रआत्मा और आप''

2. आत्मा के द्वारा एक ..... **बहाव** ..... है।

''यीशु ने उत्तर देते हुए उससे कहा, ''प्रत्येक जो इस जल में से पीता है वह फिर प्यासा होगा परन्तु जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूंगा, अनन्तकाल तक कभी प्यासा न होगा परन्तु वह जल जो मैं उसे दूंगा उसमें अनन्त जीवन कें लिए उमंडने वाले जल का स्रोता हो जाएगा'' – यहून्ना 4:13–14

''यदि कोई प्यासा हो तो मेंरे पास आए और पीए, जो मुझ पर विश्वास करता है जैसा कि पवित्रशास्त्र में कहा गया है, उसे के हृदय में से जीवन के जल की नदीयां बह निकलेगीं परन्तु ये उसने पवित्रआत्मा के बारे में कहा जिसे उस पर विश्वास करने वाले पाने पर थे इसीलिए कि पवित्रआत्मा अब तक नही दिया गया था क्योंकि यीशु अब तक महिमा में नही पहुंचा था''– यहून्ना 7:37–39

एक **पेय** एक चीज़ है!
एक **नदी** दूसरी है !

कौन एक पेय से सन्तुष्ट होगा जबकि उसके पास नदी है?
उदाहरण : एक सिंचाई की नहर

- यह इस्राएल की उस नदी के समान है जो सूखी भूमि को सिंचती है, जिसका परिणाम एक बड़ी फसल होता है। जब पानी बहना आरम्भ करता है तो यह नहर को साफ करता है, फिर इसे भर देता है, तब भूमि को तृप्त करता है, और तब फूल ओर पौधे अंकुरित हो पड़ते हैं, और जैसे पानी नहर में बहता चला जाता है, किसान नालियों को खोल देते हैं, और पानी उनके खेतों में चला जाता है, और जहां कहीं पानी जाता है, वह स्थान भर जाता है, और सुन्दर बन जाता है ।

    - यह वह चित्र है जिसे परमेश्वर हमारे जीवन में करना चाहता है।

    - परमेश्वर अपने कुण्ड को हम में उण्डेल देना चाहता है और हमारे द्वारा पवित्रआत्मा को बहाना चाहता है। पहले यह हमारे जीवन को साफ करता है, माध्यम को शुद्ध करता है। तब यह सुन्दर फल पैदा करता है। पर तब परमेश्वर की इच्छा है कि यह उन सभी लोगों मे बह निकले जो हमारे सम्पर्क में, और उन सभी हालातों मे जो हमारे जीवन में आते हैं ताकि वे परमेश्वर की सामर्थ के द्वारा प्रभावित होते चले जांए।

3. पवित्रआत्मा के साथ व्यक्तिगत रुप से बपतिस्मा यह शामिल करेगा :

1. ये आत्मा के द्वारा एक ..... **डुबकी** ..... है।

पवित्रआत्मा के बपतिस्मे को पाने का अर्थ है कि उसकी सामर्थ और उपस्थिति को अपने जीवनों में छोड़ना जब पवित्रआत्मा नए तरीके से हम में काम करता है।

'जब आपने यीशु को अपना उद्धारकर्ता ग्रहण किया,
आपमे जीवित आत्मा आई, नया जीवन प्रारम्भ करने लगी और
अपना सही स्थान आपकी आत्मा पर लेने लगी–
आपका मनौवैज्ञानिक भाग (व्यक्तित्व, इच्छा और संवेदना)
और आपकी देह – आपका शारिरीक भाग।

''आपकी देह और प्राण, फिर भी थे अभयस्त
''कार्य करने में और देर नहीं हुई कि वे
आपके जीवन में अधिकाई से उमड़ पड़ा
आत्मा में और चालक का स्थान ले लिया।

''ऐसा लगेगा कि कुछ होना है आपकी देह और प्राण में इससे पहले कि आपकी आत्मा मज़बूत पकड़ ले ले । वह ''कुछ'' जो होना है कि पवित्रआत्मा जो आपकी आत्मा में रहता है, आपके प्राण और देह में भरने के लिए उसे बहने की जरूरत है''।

डेनिस एंव रीटा बैनेट, पृष्ठ 17–18
''पवित्रआत्मा और आप''

2. आत्मा के द्वारा एक ..... **बहाव** ..... है।

''यीशु ने उत्तर देते हुए उससे कहा, ''प्रत्येक जो इस जल में से पीता है वह फिर प्यासा होगा परन्तु जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूंगा, अनन्तकाल तक कभी प्यासा न होगा परन्तु वह जल जो मैं उसे दूंगा उसमें अनन्त जीवन कें लिए उमंडने वाले जल का स्रोता हो जाएगा'' – यहून्ना 4:13–14

''यदि कोई प्यासा हो तो मेंरे पास आए और पीए, जो मुझ पर विश्वास करता है जैसा कि पवित्रशास्त्र में कहा गया है, उसे के हृदय में से जीवन के जल की नदीयां बह निकलेगीं परन्तु ये उसने पवित्रआत्मा के बारे में कहा जिसे उस पर विश्वास करने वाले पाने पर थे इसीलिए कि पवित्रआत्मा अब तक नही दिया गया था क्योंकि यीशु अब तक महिमा में नही पहुंचा था''– यहून्ना 7:37–39

एक **पेय** एक चीज़ है!
एक **नदी** दूसरी है !

कौन एक पेय से सन्तुष्ट होगा जबकि उसके पास नदी है?
उदाहरण : एक सिंचाई की नहर

- यीशु ने यहून्ना 7 में कहा, ''उसके **<u>कोयला</u>** (पेट) में से जीवित जल की नदीयां बह निकलेंगी।''

    - परमेश्वर की इच्छा यह थी कि पवित्रआत्मा जल की नदीयों के समान हममें गहराई से वास करे, हममें जीवन ले आए, हमारे अस्तित्व में ताजगी भर दे और तब जब हम असंख्य लोगों को छुते और मिलते हैं तो वह उनमें भी ताजगी ले आए। हम परमेश्वर के जीवन को जहां कहीं जांए लेकर जांए।

    - पवित्रआत्मा कभी भी इस चाहत के साथ नहीं दिया गया था कि हम उसे सम्भाले रहें। परन्तु हमें हमेशा एक माध्यम के रूप में अपने आप को देना है, जिसके द्वारा यीशु का जीवन हमारे चारों ओर, हमारे परिवार, हमारे पड़ोस, हमारे परिचितों, जिनके साथ हम काम करते है, में बहने लगे। हमारा संसार पवित्रआत्मा के बपतिस्में के द्वारा ताजगी से भर जाएगा, जो हममें एक नदी पैदा करता है, जो हमारे अस्तित्व में से बहने लगती है।

    - कैसे हम लोगों पर प्रभाव डालते हैं? क्या यह आत्मा से आत्मा का रिशता नही है — हमारी आत्मा के द्वारा हम परमेश्वर से बातचीत करते है। हम हमारी आत्मा के द्वारा — सोचते हैं, बात करते हैं, फैसला करते हैं, महसुस करतें हैं, प्रेम करते हैं — हम अपने शरीर के द्वारा लोंगों से सम्पर्क करते और मिलते हैं। यदि पवित्रआत्मा हमारी आत्मा में कैद कर दी जाए, तो हो सकता है कि हमारी परमेश्वर के साथ संगति तो हो परन्तु हममें से कोई नदी नहीं बह रही होगी।

    - परन्तु हम आत्मा के बहने वाली नदी का माध्यम बन जाते हैं, तब हमारा प्राण और देह हमारे चारों और के लिए महान ताजगी का स्रोत बन सकता है, क्योंकि पवित्रआत्मा हमारे दिमाग, हमारे शरीर, हमारी इच्छा, हमारी भावनाओं को अपने काबू में रखता है। पवित्रआत्मा हममे से हमारे सभी सम्पर्कों में बह रहा हैं। यह तो उत्साहजनक बात है।

यीशु ने कहा, *उसके* ***''कोयला''*** ..... (पेट)
में से जीवित जल की नदीयां बह निकलेंगी।''

3. आत्मा द्वारा एक **नियत्रंण** ..... है।

इफिसियों 5:18

''दाखरस पीकर मतवाले न बनो पर आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ''।

आत्मा की भरपूरी **''परमेश्वर में मतवालापन''** ..... है

4. आत्मा द्वारा एक **योग्यता** ..... है।

हम उन बातों का अनुभव करते हैं जो परमेश्वर का वचन बताता हैं कि पवित्रआत्मा विश्वासी के जीवन में करेगा।

– वह हमें सिखाता है

– वह हमें अगुवाई करता है

– वह हमें शुद्ध करता है

– वह परमेश्वर के साथ हमारा गहरा सम्बन्ध बनाता है

– वह धर्मशास्त्र को जीवित बनाता है

– वह गवाही के लिए नया जोश और साहस देता है

– वह आत्मा के फल उत्पन्न करता है (गलातियों 5:22–23)

– वह स्वर्गीय आशिष देता है (1कुरिन्थियों 12:7–11)

– वह मसीही समुदाय के कार्यों में हमें क्रियात्मक हिस्सा लेने में मदद करता है

उसका जीवन हममें डालने पर ''अलौकिक आयाम'' हममें जोङा जाता है। हम यीशु ''के जैसी'' सामर्थ का और उस काम को करने की सामर्थ जिसके लिए हमें बुलाया गया ''वही'' करें का अनुभव करने लगते है।

3. दूसरी बात जो हमारे साथ घटती हे जब हम पवित्रआत्मा की सामर्थ भरी उपस्थिति का अनुभव करते है। तब हमारे जीवन परमेश्वर के आत्मा के **<u>नियत्रंण</u>** में हो जाता है।

- इफिसियों 5:18 कहता है, दाखरस पीकर मतवाले न बनो, क्योंकि यह तो केवल नाश करता है; पर आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ, और उसके नियंत्रण मे हो जाओ।''

- ऐसा क्यों होता है जब हम कई बार पवित्रआत्मा से भरने और उसके नियंत्रण में होने से डर जाते हैं।

    - हम इसलिए डर जाते हैं क्योंकि वह हमसे वह करवाना चाहता है जिसे हम नहीं करना चाहते; कुछ ऐसा जो हमें परेशानी में डाल सकता है।

- पास्टर एडविन और ऐसे लोगों की व्याख्या करते हैं जिन्होने पवित्रआत्मा के साथ बपतिस्में को लेना नहीं चाहा मानो जैसे लोग उसे अपने घर में बुलाना चाहते हों, पर तब लोग वास्तव में नहीं चाहते कि वह उनके घरों में रहे क्योंकि वे डरे हुए थे। मानो वह उनके घर का सारा फर्नीचर तोड़ देगा। वह ऐसा कभी नहीं करेगा।

    - यह उसकी बेइज्जती करना होगा यदि कोई उसे ऐसा कहे, ''मैं तुम्हें अपने घर मे तो बुलाना चाहता हुं परन्तु मैं नहीं जानता कि आप क्या करेगें''
    - ''मुझे क्या करना चाहिए ? आप क्या सोचते हैं मुझे क्या करना चाहिए?''
    - ''मैं नहीं जानता परन्तु वहां कुछ अच्छा फर्नीचर है, और शायद आप उसके साथ कुछ करेगे...'' यह तो बेइज्जती है!
    - लोग यीशु की आत्मा से इसी तरह की बात कहते हैं। ''मैं नहीं जानता पर यदि आप अपनी पूर्णता से आना चाहते हैं तो आंए पर मुझे नहीं मालूम कि आप मेरे साथ क्या करेंगे''
    - यीशु एक भद्र पुरूष हैं। लोगों ने उसका स्वागत किया और उसके साथ रहना पसन्द किया। पवित्रआत्मा हमारी इतनी मदद करता है कि हम यीशु के समान बनते चले जांए।

- पौलुस प्रेरित इस पद में पवित्रआत्मा से भरने की समानता दाखरस से मतवाला होने से करता है।

    - क्या होता है जब एक व्यक्ति दाखरस से मतवाला होता है? एक परदेशी आत्मा उसे नियंत्रण में कर लेती है। एक नम्र व्यक्ति एक बदमाश व्यक्ति में बदल जाता है। एक आनन्दित व्यक्ति दुखी व्यक्ति मे बदल जाता है शराब की आत्मा उन्हें दुसरे व्यक्ति मे बदल देती है।
    - पौलुस कहता है ऐसा मत करें क्योंकि आपको जैसा परमेश्वर बनाना चाहता है उससे आप बहुत कम रह जाओगे।
    - इसकी बजाए पौलुस कहता है आत्मा से भर जाओ और तब आप अब की स्थिति से बहुत ऊंचे हो जाओंगे; आप वो बन जांएगे जैसा परमेश्वर आपके लिए चाहता है।
    - आत्मा से भरना वास्तव में **''<u>परमेश्वर में मतवालापन</u>''** है — यह परमेश्वर की आत्मा से मतवाला होना है।

- जहां प्रभु का आत्मा है वहां ''आजादी है बन्धन नहीं।''

यीशु ने कहा, *उसके* ***''कोयला''*** ..... (पेट)
में से जीवित जल की नदीयां बह निकलेंगी।''

3. आत्मा द्वारा एक **नियत्रंण** ..... है।

इफिसियों 5:18

''दाखरस पीकर मतवाले न बनो पर आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ''।

आत्मा की भरपूरी **''परमेश्वर में मतवालापन''** ..... है

4. आत्मा द्वारा एक **योग्यता** ..... है।

हम उन बातों का अनुभव करते हैं जो परमेश्वर का वचन बताता हैं कि पवित्रआत्मा विश्वासी के जीवन में करेगा।

– वह हमें सिखाता है

– वह हमें अगुवाई करता है

– वह हमें शुद्ध करता है

– वह परमेश्वर के साथ हमारा गहरा सम्बन्ध बनाता है

– वह धर्मशास्त्र को जीवित बनाता है

– वह गवाही के लिए नया जोश और साहस देता है

– वह आत्मा के फल उत्पन्न करता है (गलातियों 5:22–23)

– वह स्वर्गीय आशिष देता है (1कुरिन्थियों 12:7–11)

– वह मसीही समुदाय के कार्यों में हमें क्रियात्मक हिस्सा लेने में मदद करता है

उसका जीवन हममें डालने पर ''अलौकिक आयाम'' हममें जोङा जाता है। हम यीशु ''के जैसी'' सामर्थ का और उस काम को करने की सामर्थ जिसके लिए हमें बुलाया गया ''वही'' करें का अनुभव करने लगते है।

आत्मा को चौथा प्रगटीकरण जिसके बारे में हम बातचीत करना चाहते हैं वह आत्मा की **योग्यता** है।

- जैसे ही हम पवित्रआत्मा से सामर्थी किए जाते हैं हम उन बातों का अनुभव करना आरम्भ करते हैं जिसके सकेंत परमेश्वर के वचन में दिए गए है और कहा गया है कि वह अपनी आत्मा के द्वारा करेगा।
- जैसा आप अपनी प्रशिक्षण पुस्तिका में देख सकते हैं यहां पर कई तरह की योग्यतांए दी गई हैं।

    - कुछ अनुभव करेंगे कि वह उन्हे सीखा रहा है — कि उनकी आत्मिक आँखें नए रूप में खुल गई हैं।

    - वह उनकी अगुवाई करता है — उसकी आवाज़ उनके दिलों मे निर्देश और अगुवाई देती है (उदाहरण के रूप में फोन उठांए और किसी को बुलांए, सड़क पर वापस मुड़ें आदि)

    - वह हमें शुद्ध करता है; हम उस अप्रसन्न कर देने वाले व्यवहार के लिए बहाने नहीं बनांएगे जैसे हम पहले करते थे। वह अपना सम्बन्ध हमसे गहरा करता है।

    - वह पवित्रशास्त्र को जीवंत बनाता है.... कोई ऐसी बात जिसे हमने पहले पढ़ा होता है अचानक से नई समझ और शिक्षा के साथ हमारे पास जीवित हो आती है।

    - वह गवाही के लिए नया जोश और साहस देता है।

    - वह हमारे जीवन में आत्मा का फल उत्पन्ना करता है (गला. 5:22—23) — प्रेम, आनन्द, शांति, घीरज...

    - आत्मा के अलौकिक प्रगटीकरण (चंगाई, आश्चर्यकर्म, अन्यभाषा, ज्ञान या समझ के शब्द, आदि) — ऐसी बाते जो हम अपने आप से नहीं कर सकते हैं।

    - कई कारणों मे से एक कारण यह है कि परमेश्वर हमें अक्सर जल्दी से जल्दी ही स्वर्गीय भाषा देना चाहता है क्योंकि वह यह दिखलाना चाहता है, कि हमारे जीवन में अब एक अलौकिक आयाम है। यह केवल एक प्रमाण मात्र है परन्तु यह इस बात का निश्चय है कि परमेश्वर कुछ आलौकिक बातें हमारे जीवन में कर रहा है।

    - वह हमारी मदद करता है कि हम मसीही समुदाय मे अधिक क्रियाशील हो जांए।

- उसका जीवन हममें डालने पर ''अलौकिक आयाम' हममें जोडा जाता है। हम सामर्थ का अनुभव करने लगते हैं ''जैसा'' यीशु की सामर्थ, जिस काम के लिए हमें बुलाया गया ''वही'' करें।

यीशु ने कहा, *उसके* ***''कोयला''*** ..... (पेट)
में से जीवित जल की नदीयां बह निकलेंगी।''

3. आत्मा द्वारा एक **नियत्रंण** ..... है।

इफिसियों 5:18

''दाखरस पीकर मतवाले न बनो पर आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ''।

आत्मा की भरपूरी **''परमेश्वर में मतवालापन''** ..... है

4. आत्मा द्वारा एक **योग्यता** ..... है।

हम उन बातों का अनुभव करते हैं जो परमेश्वर का वचन बताता हैं कि पवित्रआत्मा विश्वासी के जीवन में करेगा।

– वह हमें सिखाता है

– वह हमें अगुवाई करता है

– वह हमें शुद्ध करता है

– वह परमेश्वर के साथ हमारा गहरा सम्बन्ध बनाता है

– वह धर्मशास्त्र को जीवित बनाता है

– वह गवाही के लिए नया जोश और साहस देता है

– वह आत्मा के फल उत्पन्न करता है (गलातियों 5:22–23)

– वह स्वर्गीय आशिष देता है (1कुरिन्थियों 12:7–11)

– वह मसीही समुदाय के कार्यों में हमें क्रियात्मक हिस्सा लेने में मदद करता है

उसका जीवन हममें डालने पर ''अलौकिक आयाम'' हममें जोडा जाता है। हम यीशु ''के जैसी'' सामर्थ का और उस काम को करने की सामर्थ जिसके लिए हमें बुलाया गया ''वही'' करें का अनुभव करने लगते है।

5. और यहां पर एक **<u>गुथना</u>** है जो पवित्रआत्मा के द्वारा हमारे जीवन और दुसरो के जीवन के बीच होता है।

- पवित्रआत्मा का सबसे पहला लक्ष्य प्रेम का नया समुदाय बनाना है।

    - बाइबल कहती है कि यीशु मसीह के इस जीवन मे आने का या पवित्रआत्मा का एक समुह के लोगों के बीच में मौजूद होना इस आधारमय प्रमाण को दिखाता है, ''देखो वे एक दूसरे से प्रेम करते हैं।''

    - आरम्भिक कलिसीया में पवित्रआत्मा ने हरेक विश्वासी मे काम किया कि वे मसीह की देह में एक हो जांए जिससे उनमें एक दूसरे में गुंथा एक सामाजिक आश्चयकर्म पैदा हो गया।

    - आरम्भिक कलिसीया का ढ़ांचा विभिन्न सामाजिक समुंहों को लेकर बना था – यहूदी और अन्यजाति, मालिक और दास, पढ़े लिखे और अनपढ़ परन्तु पवित्रआत्मा ने सारी रूकावटों को हटा दिया और उन्हें एक आत्मिक परिवार में एकत्र कर दिया।

    - यही पवित्रआत्मा करना चाहता है – नए समाज की स्थापना और उसका निर्माण – प्रेम का एक समाज।

    - पाप का प्रभाव = ''असंगठित''

    - पवित्रआत्मा का = ''संगठित''

- पवित्रआत्मा का दूसरा लक्ष्य हमें समर्पित सम्बन्धों में स्थापित करना

    - इफिसियों 2:21–22 ''हमने जिन्होने विश्वास किया सावघानीपूर्वक मसीह के हिस्सों के रूप <u>में जोडे गए</u> हैं ताकि नियमित रूप से सुन्दरतापूर्वक मंदिर के रूप में परमेश्वर के लिए बढ़ते चले जांए। और आप भी उसी में और आत्मा के द्वारा <u>एक दूसरे के साथ</u> जोड़े गए हैं और परमेश्वर के लिए उसके निवास स्थान के हिस्से है''

    - परमेश्वर व्यक्तिवाद को मुल्य नहीं देता पवित्रआत्मा व्यक्तिवाद की पवृति को ले लेना चाहता है और हमें ऐसे समुह में लगा देना चाहता है जो एक दूसरे के साथ सम्बन्धों को बनाए रखने में समर्पित हों।

5. आत्मा द्वारा एक ..... **गुथना** ..... है।

पवित्रआत्मा का उद्धेश्यः

— प्रेम का नया समुदाय बनाना

— हमें समर्पित सम्बन्ध में स्थापित करना

'जसमें सम्पूर्ण रचना एक साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मंदिर बनती जाती है जिसमें तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर के निवास स्थान होने के लिए एक साथ बनाए जाते हो' — इफिसियों 2:21—22

— हमें एकता में बांघना

..... **आत्मा** ..... की एकता

मेल के बन्धन में आत्मा की एकता सुरक्षित रहे
— इफिसियों 4:3

..... **विश्वास** ..... की एकता

जब तक कि हम सब के सब विश्वास में और परमेश्वर के पुत्र के ज्ञान में एक न हो जांए, परिपक्व न बन जांए अर्थात मसीह के पूरे डील डोल तक न बढ़ जांए — इफिसियों 4:13

..... **सेवकाई** ..... में एकता

जिससे सम्पूर्ण देह प्रत्येक जोड़ में एक साथ बन्धकर ओर सुगठित होकर प्रत्येक अंग के ठीक ठीक कार्य करने के द्वारा बढ़ती जाती है और इस प्रकार प्रेम में स्वयं उसकी उन्नति होती है — इफिसियों 4:16

- पवित्रआत्मा का तीसरा लक्ष्य हमें एकता में बांधना है

    - **आत्मा** की एकता में लाना ''...मेल के बन्धन में आत्मा की एकता सुरक्षित रहे''

    - **विश्वास** की एकता मे लाना ''...जब तक कि हम सब के सब विश्वास में और परमेश्वर के पुत्र के ज्ञान में एक न हो जांए, परिपक्व न बन जांए अर्थात मसीह...''

    - **सेवकाई** की एकता में लाना ''...एक स्वस्थ मसीह की देह बढ़ रही है और प्रेम में पूर्ण है।''

- पवित्रआत्मा इस तरह की समर्पित संगति को हमारे शहर में निर्मित करना चाहता है जो पवित्रआत्मा के साथ बपतिस्में का नतीजा होती है। तब लोग देखेंगे कि प्रमाणिक मसीहत वास्तव में क्या होती है – एक यात्रा मात्र नहीं परन्तु विस्फोटक, प्रभावशाली, असल, प्रेम भरी और समर्पित मसीहत बनाम नकली मसीहत।

- पवित्रआत्मा का बपतिस्मा आपके जीवन में जो कुछ भी लेकर आया हो इसे यदि आप अपने तक सीमित रखेंगें, यदि आप जिस उद्धेश्य के लिए दिया गया उसके लिए प्रयोग नहीं करेगें तब यह उस भोजन के समान ठहरेगा जो काफी समय से पड़ हुआ है – यह खट्टा, यहां तक कि जहरीला हो जाएगा – और जो कुछ उसमें अच्छा था, आप उसे खो देंगें।

5. आत्मा द्वारा एक .....**गुथना**..... है।

पवित्रआत्मा का उद्धेश्यः

– प्रेम का नया समुदाय बनाना

– हमें समर्पित सम्बन्ध में स्थापित करना

'जसमें सम्पूर्ण रचना एक साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मंदिर बनती जाती है जिसमें तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर के निवास स्थान होने के लिए एक साथ बनाए जाते हो' – इफिसियों 2:21–22

– हमें एकता में बांघना

.....**आत्मा**..... की एकता

मेल के बन्धन में आत्मा की एकता सुरक्षित रहे
– इफिसियों 4:3

.....**विश्वास**..... की एकता

जब तक कि हम सब के सब विश्वास में और परमेश्वर के पुत्र के ज्ञान में एक न हो जांए, परिपक्व न बन जांए अर्थात मसीह के पूरे डील डोल तक न बढ़ जांए – इफिसियों 4:13

.....**सेवकाई**..... में एकता

जिससे सम्पूर्ण देह प्रत्येक जोड़ में एक साथ बन्धकर ओर सुगठित होकर प्रत्येक अंग के ठीक ठीक कार्य करने के द्वारा बढ़ती जाती है और इस प्रकार प्रेम में स्वयं उसकी उन्नति होती है – इफिसियों 4:16

पवित्रआत्मा के बपतिस्मे का अनुभव कैसा होगा?

- परमेश्वर हमें कारों के कारखाने की तरह ''निर्मित'' नहीं करता... एक ही कार को बार–2 छाप लगाना। वह हमारे आत्मिक अनुभवों कीं मुरम्मत करता रहता है।

    - दो व्यक्तित्व एक समान नहीं हैं

    - दो बदलाव एक समान नहीं है; हम सबके पास अपनी कहानी है । आपकी आत्मिक यात्रा की कहानी दूसरे की कहानी से अलग होगी। भले ही कुछ समानतांए हों पर यह अपने आप में विशेष होगी।

    - आत्मा के साथ दो बपतिस्मे एक समान नहीं हैं ।

- दूसरों के अनुभवों की ओर मत देखें!

- पवित्रआत्मा जानता है कि हमें कैसे हमारे लिए उत्तम वरदानों और योग्यताओं से आशिषित करना है।

    - कुछ तुरन्त अन्य भाषा में बोलते हैं।

    - कुछ लोगों को परमेश्वर और दूसरे लोगों के लिए बड़ा प्रेम आ जाता है।

    - कुछ लोगों को नया आनन्द प्राप्त हेाता है।

    - कुछ लोगों को पवित्रआत्मा की आन्तिरक उपस्थिति का अहसास होता है।

    - कुछ लोगों को गवाही के लिए नई आज़ादी मिलती है।

    - कुछ लोगों को परमेश्वर की अगुवाई का तीव्र भाव महसूस हेाता है।

    - कुछ लोगों को वचन और आत्मिक संगति के लिए नई भूख पैदा होती है।

    - दूसरों को पाप और कमजोरीयों के प्रति नई जागृति का अहसास होता है।

- जब वह ऐसा करता है तो सभी में एक समान व्यक्तित्व काम करता है – पवित्रआत्मा, त्रिएकत्व का तीसरा व्यक्ति, अब हमारे जीवन में आश्चर्यजनक और आलौकिक रूप से क्रियाशील रहता है।

- आपमे से कुछ ने प्रार्थना की है और पवित्रआत्मा के बपतिस्मे को पाया है। बाकी लोग निश्चित नहीं हैं। कुछ लोगों के सामने रूकावटें हैं।

- हम लोग आज प्रार्थना करने जा रहे हैं कि परमेश्वर आपको छुटकारा दे – आप में से हरेक को – पूरे नाप के साथ जो परमेश्वर के पास आपके लिए है।

पवित्रआत्मा के बपतिस्में का यह अनुभव कैसा होगा ?

परमेश्वर जानता है कि हमारे अनुभवो को कैसे ''निर्माण करना है''

– दो व्यक्तित्व एक समान नहीं है

– दो बदलाव एक समान नहीं है

– आत्मा के साथ दो बपतिस्में एक समान नहीं हैं

हमारे व्यक्तिगत अनुभवों की विस्तृत जानकारी भिन्न होगी परमेश्वर हमें कारखाने की मशीन में नहीं डालता कि हम सब एक समान निकलें। वह अपनी योजना के मुख्य नक्शे के अनुसार हर एक में अपने जीवन का व्यक्तिगत भाव उत्पन्न करता है। वह जानता है कि हमें आशिषित कैसे हमारी योग्यताओं और वरदानों के अनुसार करना है जो हमारे लिए भले हैं।

पर जब यह करता है तब एक बात है जो हमेशा एक समान रहेगी : पवित्रआत्मा ईश्वरत्व का तीसरा व्यक्ति है यह अब आश्चर्यजनक रूप से, आलौकिक रूप से हमारे जीवनों में बड़ी शक्ति के साथ क्रियाशील है।

1 इफिसीयों 5:18 पढ़ियें। आप किस तरह से ''शराब के मतवालापन मे'' और ''पवित्रआत्मा की भरपूरी'' में तुलना देखते हैं?

2. यहून्ना 7:37—39 पवित्रआत्मा के साथ बपतिस्में के बारे में जो आपने सीखा, उस से कैसे सम्बन्ध रखता है?

3. वह क्या चीज़ होगी जो सबके अनुभवों में एक सी ही होगी जो पवित्रआत्मा का बपतिस्मा लेते हैं?

4. मती 14:27—23 को सावधानी से पढ़िए (खाली स्थान भरो)

चेले डरे हुए थे, यीशु ने तुरन्त उनसे बाते की, और कहा;.....बांधो; मैं हूं;..... । पतरस ने उसको उत्तर दिया हे प्रभु..... .....तो मुझे अपने पास पानी पर चलकर आने की आज्ञा दे। उसने कहा, आ : तब पतरस.....उतरकर यीशु के पास जाने को पानी पर चलने लगा। पर हवा को देखकर .....और जब .....लगा तो चिल्लाकर कहा ;हे प्रभु मुझे बचा। यीशु ने तुरन्त हाथ बढ़ा कर उसे थाम लिया, और उससे कहा,..... .....किया।

कृप्या सावधानी से नोट करें : पतरस यीशु की तरह पानी पर चलना चाहता था। यीशु ने कहा, ''आ'' परन्तु यीशु ने पतरस को नाव से बाहर नहीं उठाया, उसने केवल पतरस को विश्वास से बुलाया। पतरस को अपना एक पांव नाव से बाहर लाना था और तब नाव से दूसरा पांव और विश्वास में एक कदम लेना था और नाव को पूरी तरह छोड़ देना था इससे पहले कि वह पानी पर चले ।

पतरस की तरह आपको भी विश्वास का एक कदम लेना चाहिए। यदि पवित्रआत्मा का बपतिस्मा (या भरना) लेना है तब दृढ़ता से विश्वास करें कि वह करेगा और तब आप नये दृष्टिकोण में चलना आरम्भ करेंगे जैसा उसने देने के लिए प्रतिज्ञा की है।

पहला

पिछले सप्ताह के प्रश्न पत्र के समूह के प्रत्युतर को देखें। बहुतों को कहानी पढ़ने दें जिसे उन्होंनें पत्र की पिछली ओर लिखा है।

बाद में

यदि किसी सदस्य ने पवित्रआत्मा के बपतिस्में का अनुभव किया हेा तो उन्हें बांटने दें कि कैसे और कब उन्हें ये अनुभव हुआ।

अब

हर एक के अनुभव का विस्तार भिन्न — 2 होगा। पर ''एक चीज'' होगी जो हमेशा एक सी ही रहेगी हमारे सभी बपतिस्मों में जो पवित्रआत्मा के साथ हैं। वह ''एक चीज़'' आज की रात की शिक्षा की रोशनी में क्या होगी उसके बारे में वार्तालात करें।

तब

निम्नलिखित प्रश्नों पर चर्चा ठीक हेागा :

1. क्यों पवित्रआत्मा का बपतिस्मा पवित्रता और परिपक्वता का चिन्ह नहीं है? क्या अधिकतर विश्वासी इसे समझते हैं?
2. हमारे लिए कैसे वह पवित्रआत्मा के बपतिस्मा के साथ नए ''अलौकिक आयाम' को हमारे जीवनों के लिए खोलता है? इस बारे में कुछ को अपने अनुभव बताने के लिए उत्साहित करें।
3. पवित्रआत्मा के बपतिस्में का अनुभव करने के लिए विश्वासी को कौन सी रूकावटें आ सकती हैं?

समूह के अगुवे की टिप्पणी :

घमण्ड, हमारी आधीनता में न आने वाली इच्छा, बिना अगीकार किए हुए पाप, आत्मा के वरदान के लिए कम खुलापन, या बीते हुए समय में झुठी शिक्षाओं का अभ्यास जिनको अभी तक छोडा न गया हो पवित्रआत्मा के साथ बपतिस्में को हमारे जीवनं मे आने से रूकावट पैदा कर सकती हैं।

अन्त में

उन्हें आमत्रिंत करें जो पवित्रआत्मा के बपतिस्में के लिए विशेष प्रार्थना करवाना चाहते हैं उनके लिए या तो समुह में प्रार्थना करें या फिर अधिवेशन के बाद में उनके लिए प्रार्थना करने के लिए रूकें।

आगामी सप्ताह के लिए

1. अधिवेशन 2 के लिए प्रश्न पत्र को पूरा करें।